पाठ 11

अपनी कमाई

प्रातःकाल धनी पिता ने अपने अमीर और आराम तलब बेटे को बुलाया और कहा ''जाकर कुछ कमा ला, नहीं तो रात को भोजन नहीं मिलेगा।''

लड़का बेपरवाह और दुर्बल था। उसे परिश्रम करने का अभ्यास न था। वह सीधा अपनी माँ के पास गया और रोने लगा। माता ने बेटे की आँखों में आँसू और उसके मुख पर चिन्ता और शोक की मलिनता देखी तो उसकी ममता बेचैन हो गई। उसने अपना संदूक खोला और एक रुपया निकाल कर बेटे को दे दिया।

रात को पिता ने बेटे से पूछा

''आज तुमने क्या कमाया?'' लड़के ने जेब से एक रुपया निकालकर पिता के सामने रख दिया। पिता ने कहा–''इसे कुएँ में फेंक आ।'' लड़के ने तत्परता के साथ पिताजी की आज्ञा का पालन किया।

अनुभवी पिता सब कुछ समझ गया। दूसरे दिन उसने स्त्री को मैके भेज दिया।

तीसरे दिन उसने फिर लड़के को बुलाया और कहा ''जा कुछ कमा ला, नहीं तो रात को भोजन नहीं मिलेगा।'' लड़का अपनी बहिन के पास जाकर रोने लगा। बहिन ने अपना सिंगारदान खोला, उसमें से एक रुपया निकाला और भाई को दे दिया।

रात को पिता ने बेटे से पूछा, ''आज तुमने क्या कमाया?''

लड़के ने जेब से एक रुपया निकालकर पिता के सामने रख दिया। पिता ने कहा

''इसे कुएँ में फेंक आ!''

लड़के ने तत्परता के साथ आज्ञा का पालन किया। अनुभवी पिता सब कुछ समझ गया। दूसरे दिन उसने अपनी बेटी को ससुराल भेज दिया।

इसके बाद उसने एक दिन फिर बेटे को बुलाकर कहा,–''जाकर कुछ कमा ला, नहीं तो रात को भोजन नहीं मिलेगा।''

लड़का सारा दिन उदास रहा और उसकी आँखों से आँसू बहते रहे, परन्तु आँसुओं को देखने वाली

शिक्षण संकेत

- कहानी का वाचन उचित हाव-भाव से करें।
- कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण छात्रों की सहभागिता से करें।
- जीवन का महत्व समझाएँ।

प्यार की आँखें घर में न थी। विवश होकर संध्या समय वह उठा और बाजार में जाकर मजदूरी खोजने लगा।

एक सेठ ने कहा–''मेरा संदूक उठाकर घर ले चल। मैं तुझे दो आने दूँगा''

धनी पिता के बेटे ने संदूक उठाया और उसे सेठ के घर पहुँचाया। लेकिन उसकी सारी देह पसीने से

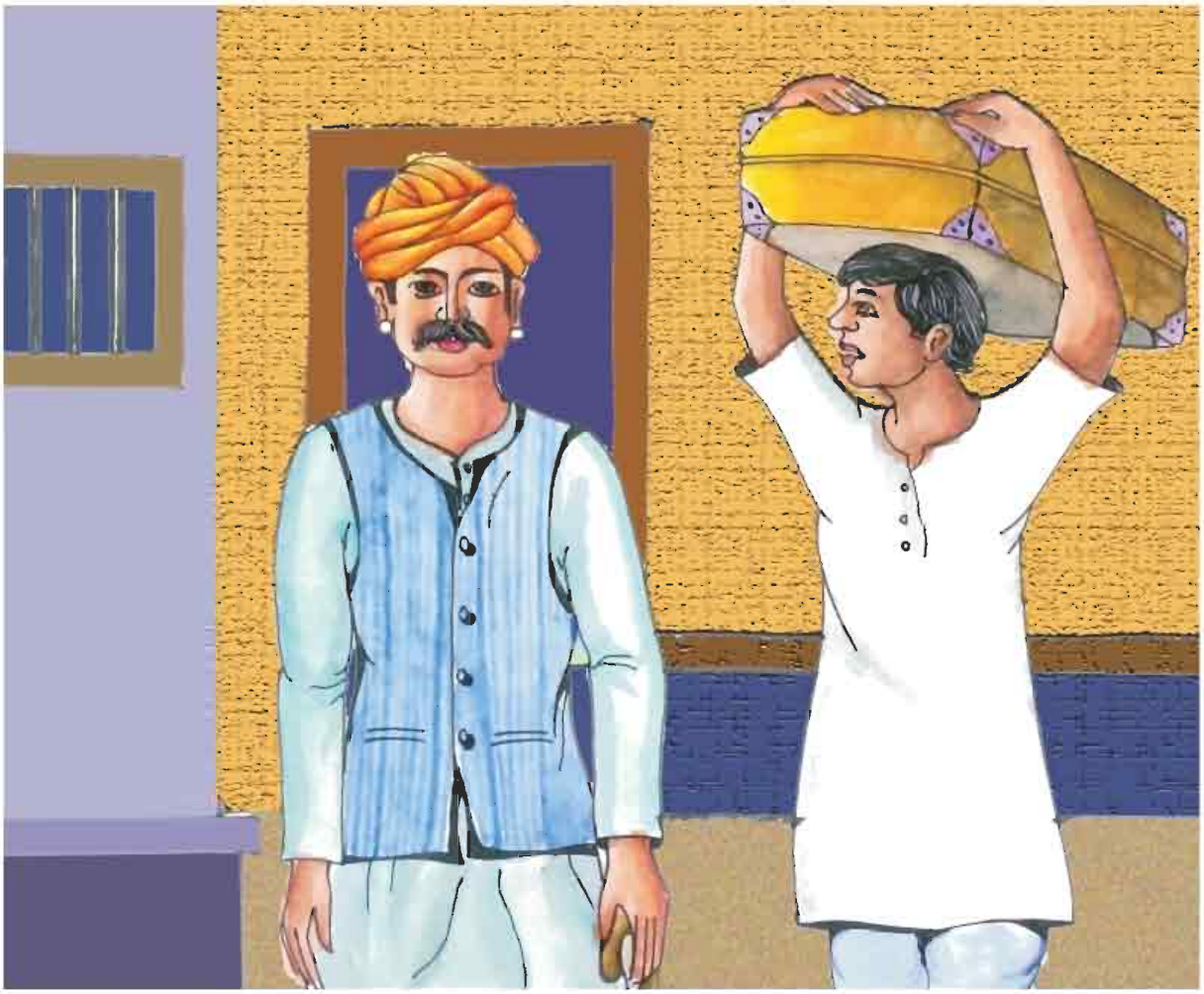

तर थी। पाँव काँपते थे, गर्दन और पीठ में दर्द होता था।

रात को पिता ने बेटे से पूछा

''आज तुमने क्या कमाया?''

लड़के ने जेब से दुअन्नी निकाल कर पिता के सामने रख दी ।

''पिता ने कहा इसे कुँए में फेंक आ।''

लड़के की आँखों से क्रोध की ज्वाला निकलने लगी। बोला ''मेरी गर्दन टूट गई और आप कहते हैं ''कुएँ में फेक आ।''

अनुभवी पिता सब कुछ समझ गया। दूसरे दिन उसने अपना कारोबार बेटे के सुपुर्द कर दिया।

▸ सुदर्शन

नए शब्द

बे परवाह =किसी बात की परवाह न करने वाला । **दुर्बल**= कमज़ोर। **तत्परता से**=शीघ्रता से। **विवश**=मजबूर। **देह** = शरीर। **आराम तलब** = सुख चाहने वाला। **मलिनता** = गंदगी, उदासी। **सुपुर्द कर दिया** = सौंप दिया। **कारोबार** = कार्य–व्यापार, काम–धंधा।

अनुभव विस्तार

1. कहानी से खोजकर बताइए–

(क) सही जोड़ी बनाइए–

लड़का	–	सिंगार दान खोला
धनी	–	ममता
बहिन ने	–	पिता
माँ की	–	बेपरवाह और दुर्बल

(ख) कहानी पढ़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. माता ने बेटे के मुख पर चिन्ता और शोक की.....देखी।
2. .....पिता सब कुछ समझ गया।
3. लड़के ने .....निकालकर पिता के सामने रख दी।
4. पिता ने अपना कारोबार बेटे के .....कर दिया।

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए–

1. धनी पिता ने अपने बेटे से क्या कहा?
2. बेटा माँ के पास क्यों गया था?
3. पिता अपने बेटे को क्या सिखाना चाहते थे?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्य में दीजिए-

1. पिता ने लड़के द्वारा दो बार लाए पैसे कुएँ में क्यों फिकवा दिए?
2. माँ और बहन के दूर जाने का लड़के पर क्या प्रभाव पड़ा?
3. तीसरी बार पैसा कुएँ में फेंकने के आदेश से लड़का क्रोधित क्यों हुआ?
4. पिता ने कारोबार बेटे के सुपुर्द करने का निश्चय कब किया?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और दिए गए स्थानों में लिखिए-

आराम तलब	–	.....
तत्परता	–	.....
सिंगारदान	–	.....
दुअन्नी	–	.....

2. शुद्ध वर्तनी पर गोला लगाइए-

सँध्या	संध्या	संधया
मलनिता	मलिनता,	मलनता
गरदन	गदर्न	गर्दन

3. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए-

लड़के को परिश्रम करने का अभ्यास न था। सीधा अपनी माँ के पास गया और रोने लगा। माता ने बेटे की आँखों में आँसू और उसके मुख पर चिन्ता और शोक की मलिनता देखी तो उसकी ममता बेचैन हो गई। उसने अपना सन्दूक खोला और एक रुपया निकाल कर बेटे को दे दिया। अनुभवी पिता सब कुछ समझ गया। दूसरे दिन उसने स्त्री को मैके भेज दिया।

उपर्युक्त अनुच्छेद में रेखांकित शब्दों को ध्यान से पढ़िए, ये सभी शब्द हिन्दी भाषा के नहीं हैं। इनमें परिश्रम, अभ्यास, चिन्ता, शोक, मलिनता शब्द 'संस्कृत' भाषा से हिन्दी में ज्यों के त्यों लिए गए हैं। 'आँखों' और 'आँसु' शब्द संस्कृत से रूप परिवर्तन के साथ हिन्दी में आए हैं। इसी प्रकार 'बैचैन' और

'संदूक' शब्द विदेशी भाषा से हिन्दी में आए हैं तथा 'मैके' शब्द बोली से हिन्दी में आया है,

अतः जो शब्द संस्कृत भाषा से हिन्दी में ज्यों के त्यों ले लिए गए हैं उन्हें **तत्सम शब्द** कहते हैं। संस्कृत के ऐसे शब्द जो कुछ रूप परिवर्तन के साथ हिन्दी में आए हैं, उन्हें **तद्भव शब्द** कहते हैं। अन्य भाषाओं जैसे अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी आदि के शब्द जो हिन्दी भाषा में आए हैं, **उन्हें आगत या विदेशी शब्द** कहते हैं।

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव तथा विदेशी शब्द छाँटकर लिखिए-

दुर्बल, परिश्रम, आँसू, संदूक, दधि, दही, किताब, स्कूल, दीवार, गर्दन।

तत्सम	तद्भव	विदेशी
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

प्रश्न 2 पाठ में आए हुए सर्वनामों को खोजिए एवं उनकी सूची बनाइए-

अब करने की बारी

अब करने की बारी

1 'परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।' इस सम्बध में एक अनुच्छेद लिखिए-

2 अपने आस-पास रहने वाले मित्रों को एकत्रित कर 'जीवन में मेहनत आवश्यक' है विषय पर चर्चा कीजिए, प्रत्येक के विचार दो-दो वाक्यों में लिखें।

3 आपके गाँव/शहर में बैंक होगा अपने शिक्षक की सहायता से बैंक जाकर रुपये जमा करने व निकालने की प्रक्रिया को समझें।

4 आप अपने परिवार की मदद करने के लिए,घर के कौन-कौन से कार्य स्वंय करते हैं। सूची बनाइए।

——— 0 ———